कविता

आओ शुरुआत करें

अशोक कुमार ढोरिया*

आज मानव कर रहा वनों का ह्रास
तो फिर कहाँ देखता मंगल की आस
कंक्रीट में बदल दिया है जंगल
तो बताओ कहाँ उगेगी हरी घास।

आओ एक दूजे को जगाएँ
मिलकर पेड़ लगाएँ।

पानी जीवन को करता है आबाद
फिर हम क्यों करें इसे बरबाद ?
बूँद-बूँद में जीवन बसता ये है कुदरत का प्रसाद
फिर बर्बाद करने में क्यों हैं हम इतने आज़ाद।

आओ एक बढ़िया-सा कदम उठाएँ
लंबा जीवन जीने को जल बचाएँ।

आग न लगाएँ खलिहानों में
कितने जीव जल जाते हैं
नन्हें-नन्हें जीव अनेक मिट्टी में मिल जाते हैं
आओ एक नयी शुरुआत करें
फसल अवशेष से खाद बनाएँ
अच्छी फसल खेत में उगाएँ।

* *प्राथमिक अध्यापक*, राजकीय प्राथमिक विद्यालय तुम्बाहेड़ी (झज्जर), हरियाणा 124 109